चौपाई खुल गयी

-: श्रीमुख वाणी मंथन के सदर्भ में :-

पूज्य सरकार श्री जी की श्री मुख ब्रह्मवाणी सम्बन्धी विचार धाराओं के विरोध में यदि कोई एक सबसे जबरदस्त शिकायत रखी है तो वह यह थी कि जगदीश जी को और कोई काम होता ही नही रोज रोज वाणी की चौपाई के नये नये अर्थ निकालते रहते हैं, सूरज उगा नही और एक नया विषय छेड़ देते हैं जिससे समाज में विघटन होता रहता है।

एक तरफ तो यह बातें, इससे विपरीत प्रक्रिया में हम सब श्री निजानन्द जागनी अभियान समर्पित सुन्दर साथ को ऐसा एहसास हो रहा था कि सरकार श्री के श्री मुख से रहस्य धनी की मेहेर से खुल रहे हैं, गुढ़ार्थ दिन प्रति दिन स्पष्ट होते हैं। जिससे श्री राज जी के प्रति हमारे ईश्क, ईमान में वद्धि हो रही है। हमारी निसबत दृढ़ हो रही है। पहचान पक्की हो रही है।

सुन्दरसाथ जी! यदि हम लोग पूज्य सरकार श्री की वाणी चर्चा को लौकिक दृष्टि कोण से देखें तो उनकी बातो के पीछे छिपा मूल भाव कभी नही पकड़ पाते और आज हमें वाणी मंथन का जो आनन्द एवं उसमें से जो नये नये रस प्राप्त हो रहे है वह न मिल पाते। श्री मुखवाणी रूपी ब्रह्म ज्ञान एक ऐसा अथाह सागर है जिसमें से कोमल हृदय से सैर करने वाले को विध विध के नये से नये सुखों की प्राप्ति होती रहती है। वाणी रूपी सागर में गोते लगाने से नये नये मोतियों की प्राप्ति होती ही रहती है। हाँ सुन्दरसाथ जी यही तो हमारे लिये सबसे बड़ा कारण है वाणी मंथन का। लेकिन इस वर्ष २००१ के भण्डारे के महोत्सव पर श्री निजानन्द आश्रम, रतनपुरी में मुझे उपरोक्त हमारे विचारों से विपरीत एक विशेष अनुभव हुआ। श्री कुलजम स्वरूप में प्रस्तुत जागनी प्रक्रिया के सन्दर्भ में मै मेरे इस महत्व पूर्ण अनुभव को सब सुन्दरसाथ समाज के समक्ष विचार के लिए रखना चाहूँगा। यह इसलिए कि पूज्य सरकार श्री के भौतिक तन छूटने के बाद श्री मुखवाणी मंथन सम्बन्धी यह बात हम सब सुन्दरसाथ एवं धर्म प्रचारक वर्ग के लिए अत्यन्त विचार करने योग्य है।

हाँ, सुन्दरसाथ जी, बात कुछ ऐसी है। मेरे एक घनिष्ठ मित्र सुन्दरसाथ जी ने मस्ती में आकर हंसते हंसते मुझसे एक बात कह दी, अरे, नरेन्द्र भाई ! इधर तो आओ। आज तो मुझे वाणी की चौपाई खुल गयी हा.. हा.... हा... । अरे यार, कौन सी चौपाई खुल गयी? मैने पूछा", बताओ तो सही, आखिर कौन सी चौपाई खुल गई - क्या बात है ? फिर उन्होने यही कहा हंसते हसंते" बस पूछो ही मत । चौपाई खुल गयी ! हा... हा.. हा... (हास्य)

एक बार तो मैने भी उनकी हँसी में हँसी मिला दी, लेकिन थोड़ी सी देर के बाद जब मै उनसे दूर हटा तो उनकी इस हँसी, मस्ती मजाक में मुझे हमारी छुपी हुई वैचारिक संकीर्णता

Nijanand App

प्रतिबन्धित होती हुई दिखाई दी। मुझे यह बात दृढ़ होने लगी कि आज हममें से कई सुन्दरसाथ ऐसी मान्यता किये है अब पूज्य सरकार श्री के बाद श्री मुखवाणी की चौपाई का नया अर्थघटन करने की बात ही निरर्थक है और वाणी के सभी रहस्य खुल गये हैं। अब कुछ बाकी ही नही रहा तथा अब यदि कोई व्यक्ति उमंग में आकर यह कहे कि मुझे वाणी की फलानी चौपाई खुल गयी है तो केवल ऐसा ही समझा जाता है कि यह व्यक्ति अपना व्यक्तिगत महत्व बढ़ाने ही का प्रयास कर रहा है कभी कभी हम अपनी नादानियत में ऐसे सुन्दरसाथ धर्म प्रचार की हँसी भी उड़ा लेते है बिल्कुल वैसे ही जैसे कि पूज्य सरकार श्री की दूसरे विपक्षी लोग उड़ाते थे। मेरा लक्ष्य किसी वर्तमान व्यक्ति की तुलना करना नही है मेरा लक्ष्य केवल हमारी वैचारिक मनःस्थिती की दिशा के प्रति ध्यान दिलाना है।

यह बात स्पष्ट करने के लिए मैं जागनी की चार सीढ़ी शरीयत (कर्मकाँड), तरीकत (उपासना) हकीकत (ज्ञान) और मारफत (विज्ञान) की व्याख्या अत्यन्त सरल शब्दों में करना चाहुँगा। आशा है सभी सुन्दर साथ इस पर विचार करेगें, और वाणी मंथन के हमारे जागनी कर्म को भव्यता प्रदान करेंगें।

१. जागनी एक जीवन पर्यतं चलने वाली प्रकिया है। जो अंतिम सांस तक नही रुकती। जिस किसी सुन्दरसाथ ने दिल में यह भाव ले लिया कि मेरी जागनी हो गयी या तो अब वाणी के नये भेद नही खुलने हैं वह व्यक्ति केवल जागनी की पहली सीढ़ी पर अर्थात कर्म काण्ड (शरीयत) के स्तर पर ही खड़ा है। केवल बाहरी दृष्टि से धर्मपालन से ऐसे व्यक्ति वाणी मंथन से बाहर है। इसकी मान्यताओं में महाप्रलय की ओट में जीवन आयोजन न करना, माया को दोष देकर हर काम में अपने आप को बचा लेना, (जिम्मेदारी से) आदि विचार प्रमुख पाये जाते हैं।

२. दुसरा वह सुन्दरसाथ जो श्री जी की वाणी या तो पूज्य सरकार श्री के वचनों को केवल शाब्दिक (LITERAL) भाव से लेकर उन पर यथार्थ विचार किये बिना ही उनका प्रयोग अंतिम आदेश मान कर करें और ऐसा भाव रखें कि उससे ज्यादा कुछ सोचने की आवश्यकता नहीं है तो यह बातें उनकी व्यतिगत आध्यात्मिक आवश्यकता के सन्दर्भ में तो ठीक ही लगती हैं लेकिन यह अंतिम कुलजमयी दिशा नहीं है। यदि कोई सुन्दरसाथ अपनी समझ की सीमा में किसी अन्य की वाणी आनन्द की तरगों की बांध देना चाहे तो वह भले ही ईमान वाला हो लेकिन वह अभी शायद तरीकत की दूसरी सीढ़ी पर ही माना जायेगा। हां ऐसा व्यक्ति नियमों का पालन करने वाला (जैसे मंदिर पुजारी का कार्य क्षेत्र है) तो होता है, लेकिन उसे इससे ऊपर उठना ही होगा।

३. हकीकत (ज्ञान) की तीसरी सीढ़ी पर खड़ा सुन्दरसाथ जागनी की व्यतिगत एवं सामूहिक

Nijanand App

प्रक्रिया को कुलजमयी समग्रता के उपलक्ष्य में देखने को प्रयासशील रहता है। दूसरी सीढ़ी पर खड़े व्यक्ति के विपरीत यह सुन्दरसाथ अपनी वाणी समझ के अनुसार कार्य करने में हमेशा प्रयासरत रहता है। आत्म जागृति सम्बन्धी हर एक बात को वह वैज्ञानिक, तार्किक, नैतिक, मानवीय दृष्टिकोण से भी समझने को प्रयासशील है और फिर उसमें कुलजमयी बड़े चित्र में रखने का प्रयास करता है। यह सुन्दरसाथ प्रथम दो सीढ़ी पर खड़े सुन्दरसाथ से तो अधिक बे-शक है लेकिन वह हमेशा ही प्रश्न पूछता रहता है। उसके दिल में नये नये प्रश्न जिसमें वह युगल धनी के निकट जा सके इमान इश्क में वृद्धि होती रहे उठते ही रहते हैं और वाणी मंथन से उसकी तृप्ति भी होती रहती है, सीढ़ी नं० १ और २ वाले अपने आपको बे:शक मान लेते हैं लेकिन यह हकीकत के ज्ञान में घूमने वाला सुन्दरसाथ कुलजमयी बेशकी की ओर आगे बढ़ता ही रहता है। कभी रुकता नही है।

४. अब जो सुन्दरसाथ श्रीमुखवाणी रस में, धनी की याद में मगन दिन रात रहता है। वाणी मंथन में धनी का अनुभव करता है। नयी नयी आनन्द की तरंगे देखा करता है, वह जागनी की अंतिम चौथी सीढ़ी मार्फत (विज्ञान) पर अग्रसर है। मार्फत के प्रदेश में घूमने वाला वाणी की विशालता को किसी सीमा में नही बाँध सकता। वह हर पल नये-नये भेद को पाता रहता है (सुखों को) उसके लिए जागनी का कभी पूर्णविराम नही होता। ऐसी उत्क्रान्त विचार धारा को हृदय में लाने वाला सही में बेशक हुआ जानियो। उसके वाणी, वचन, कर्म, विचारो में परिपक्वता के दर्शन होते हैं। भले ही वह अपने आप को व्यक्त न कर पाये ।

सुन्दरसाथ जी ! आज हम में से कौन, कहां, कौन सी सीढ़ी पर खड़ा है। यह कह नही सकते। कुछ तो उत्तरोतर एक से दूसरी सीढ़ी चढ़ते ही जाते हैं, कुछ मर्यादा से तो कुछ एक ही सीढ़ी पर अटके पड़े रहते है। जहाँ है उसे ही अंतिम मान कर वही पर ही विश्राम कर लेते है। जो मारफत प्रदेश में आगें बढ़ रहे है वह समझते है कि वाणी की चौपाई खुल सकती है-अब भी। और हाँ यदि खुल भी सकती है तो फिर बन्द भी हो सकती है। जिसके लिए बन्द हुई उस बेचारे को पता ही नही चल पाता कि यह खुली हुई चौपाई बन्द कैसे हो गयी? उपर से तो लगता है मेरे पास ही है लेकिन रेहनी में न खुली तो क्या खाक खुली? जब हम इस बात को सदैव ध्यान में रेखेगें तो हमें धनी की मेहेर से चौपाई खुलती ही रहेगी-खुलती ही रहेगी .....

प्रणाम जी-

Narendra R. Patel, New Jersey (USA)

जाग्रत ज्ञान

जाग्रत ज्ञान की शक्ति के अलौलिक होनें से अविधा नष्ट हो जाती है तथा मोह क्षीण हो जाता है। माया रूपी अज्ञान से उसका बन्धन मुक्त सम्बन्ध होता है। वे अज्ञान रूपी नींद को छोड़कर जाग्रत हो जाती है तथा उनकी आत्मा में जाग्रत बुद्धि के ज्ञान से शब्द द्वारा पारब्रह्म तथा परमधाम का बोध हो जाता है।

Nijanand App